

## थेरी मरुस्थल

थेरी मरुस्थल के निर्माण के संबंध में कुछ सदिधांतों पर बहस हो रही है, जिनमें से सबसे वशिवसनीय दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं की भूमिका है।

### थेरी मरुस्थल:

- यह तमलिनाडु राज्य में स्थिति एक छोटा सा रेगसितान है। इसमें लाल रेत के टीले हैं और यह थूथुकुडी ज़िले तक ही सीमिति है।
- लाल टीलों को तमलि में 'थेरी' कहा जाता है। इनमें क्वार्टनरी युग (2.6 मिलियन वर्ष पहले शुरू हुई) की तलछट शामिल हैं और यह समुद्री नक्षिप से बने हैं।
- इसमें बहुत कम पानी और पोषक तत्व धारण क्षमता है। टबिबा वायुगतिकीय उभार के लिये अतसिंवेदनशील होते हैं। यह वह दवाब है जो किसी चीज को ऊपर जाने देता है। यह वह बल है जो भार के वपिरीत होता है।

### थेरी की खनजि संरचना:

- पेट्रोग्राफिकल अध्ययन (पेट्रोग्राफी चट्टानों की संरचना और गुणों का अध्ययन है) और लाल रेत के टीलों के एक्स-रे वविरत्न वशिलेषण (एक सामग्री की क्रस्टिलोग्राफिक संरचना को नरिधारति करने के लिये इस्तेमाल की जाने वाली वधि) से भारी और हलके खनजिों की उपस्थिति का पता चलता है।
- **इनमें शामिल हैं:** इलमेनाइट, मैग्नेटाइट, रूटाइल, गार्नेट, ज़रिकोन, डायोपसाइड, टूमलाइन, हेमेटाइट, गोएथाइट, कानाइट, क्वार्टज़, फेल्डस्पार और बायोटाइट।
- मृदा में मौजूद आयरन से भरपूर भारी खनजि जैसे इलमेनाइट, मैग्नेटाइट, गार्नेट, हाइपरस्थीन और रूटाइल सतह के जल से नक्षिषालति हो गए थे और फरि अनुकूल अर्ध-शुष्क जलवायु परस्थितियों के कारण ऑक्सीकृत हो गए।
- यह इन प्रक्रियाओं के कारण था कि थूथुकुडी ज़िले के एक तटीय शहर तरिचेंदूर के पास के टीले लाल रंग के होते हैं।

### थेरी टबिबा निर्माण:

- थेरी मुलायम, लहरदार क्षेत्र के रूप में दिखाई देता है। लथोलॉजी (चट्टानों की सामान्य भौतिक वशिषताओं का अध्ययन) कि यह क्षेत्र अतीत में एक पैलियो (प्राचीन) तट रहा होगा। कई स्थानों पर चूना पत्थर की उपस्थिति समुद्री अतकिरण का संकेत देती है।
- समुद्र के प्रतगिभन के बाद, स्थानीय रूप से समुद्र तट की रेत के परसिंमन द्वारा वर्तमान समय के थेरियों का गठन हुआ होगा। जब पश्चिमी घाट से उच्च वेग वाली हवाएँ पूर्व की ओर चलीं, तो उन्होंने रेत के दानों और टीलों के संचय को प्रेरति किया।
- एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि ये भूवैज्ञानिक संरचनाएँ हैं जो कुछ सौ वर्षों की अवधि में प्रकट हुईं।
- इन थेरियों के ऊपर काफी मात्रा में लाल रेत फैली हुई है। लाल रेत मई-सतिंबर के दौरान दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं द्वारा नांगुनेरी क्षेत्र (तरिनेलवेली जिले के इस क्षेत्र से लगभग 57 किलोमीटर) के मैदानी इलाकों में लाल दोमट की एक वसित्तुत बेल्ट की सतह से लाई जाती है।
- वनों की कटाई और वानस्पतिक आवरण की अनुपस्थिति को वायु अपरदन का प्रमुख कारण माना जाता है।
- जब शुष्क मानसूनी हवा तेज वेग से चलती है, तो लाल दोमट को लाल रेत के वशिाल स्तंभों के साथ पूर्व की ओर तब तक ले जाती है, जब तक कि वे तरिचेंदूर के तटीय पथ के पास समुद्री हवा से मलि कर वहाँ जमा नहीं हो जाते।
- पृथ्वी की सतह पर या उसके पास हवा के कारण होने वाले तलछट के क्षरण, परविहन और जमा की ये प्रक्रिया 'एओलियन' प्रक्रिया कहलाती है।

### स्रोत- डाउन टू अर्थ